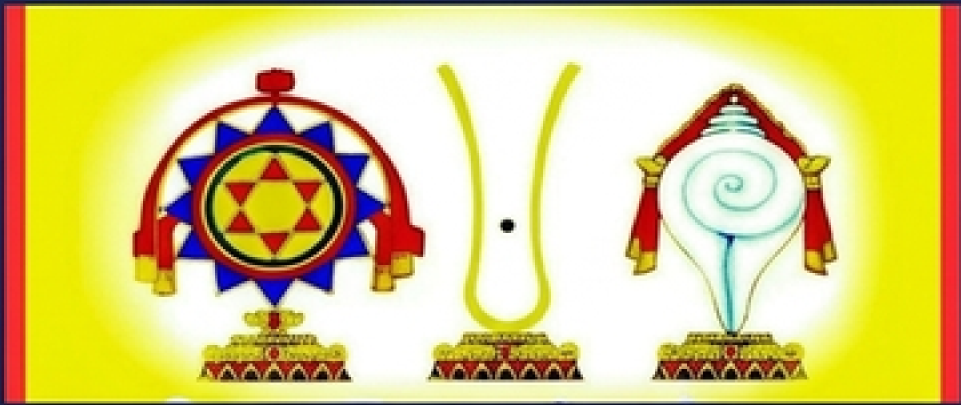
।। श्री राधा सर्वेश्वरो विजयेत ।।
|| Shri Radhaa Sarveshwaro Vijayate ||



जगदगुरु निंबार्काचार्य: सनातन के सूर्य
Jagatguru Nimbarkacharya: The Sun of Sanatan Dharma

सनातन वैष्णव परंपरा और निंबार्काचार्य की दिव्य विरासत
The Divine Legacy of the Eternal Vaishnav Tradition and Nimbarkacharya



नरेश दास वैष्णव निंबार्क

अंतरराष्ट्रीय लेखक | इतिहासकार | सेवानिवृत्त भारतीय सैनिक | संयुक्त राष्ट्र के दिग्गज
International Author | Historian | Retired Indian Soldier | UN Veteran

www.nareshswaminimbark.in

।। श्री भगवान् निंबार्काचार्य नमः ।।
|| Shri Bhagavan Nimbarkacharyaya Namah ||

॥ श्री राधा सर्वेश्वरो विजयते ॥

समर्पण

यह ग्रंथ सादर समर्पित है —

जगद्गुरु भगवान श्री निम्बार्काचार्य के
पावन चरण-कमलों में,
जिन्होंने महाराष्ट्र के मूँगी ग्राम में
गोदावरी के पवित्र तट पर
राधा-कृष्ण की दिव्य प्रेम-भक्ति का
अनन्त प्रकाश जगत को दिया।

मेरे प्रिय पोते भावेश वैष्णव को —
जो इस वृद्ध फ़ौजी के साथ
मन्दिर-मन्दिर, गाँव-गाँव, ज़िला-ज़िला
पूरे भारतवर्ष में घूमा।

उन समस्त वैष्णव बैरागी सन्तों एवं पूर्वजों को —
जिनकी वाणी शताब्दियों तक अनसुनी रही —
यह ग्रंथ उन्हीं की गाथा है।

— नरेश दास वैष्णव निम्बार्क

नायब सूबेदार (से.नि.), भारतीय सेना

www.nareshswaminimbark.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२६
प्रकाशक : Notion Press

लेखक : नरेश दास वैष्णव निम्बार्क
नायब सूबेदार (से.नि.), भारतीय सेना
२८ वर्ष सैन्य सेवा

वेबसाइट : www.nareshswaminimbark.in
Amazon: https://amzn.in/d/0cOvmcp5

भूमिका

बन्दूक से कलम तक — मेरी यात्रा का निचोड़

इतिहास अक्सर महलों की चौखट पर जाकर दम तोड़ देता है, किन्तु सत्य आज भी उन मठों और अखाड़ों की धूल में सुरक्षित है — जहाँ कभी 'माला' और 'भाला' एक साथ तपस्या करते थे।

मेरी यात्रा किसी पुस्तकालय के बन्द कमरों में नहीं, बल्कि ग्वालियर की उस पवित्र माटी से आरम्भ हुई — जहाँ आज भी हवाओं में 1857 के बारूद की गन्ध और संतों के बलिदान की गूँज सुनाई देती है।

18 जून, 1858 — 745 बैरागी योद्धाओं ने एक ही दिन में अपने प्राणों की आहुति दे दी। वे न किसी राजसी वैभव के भूखे थे, न उनके पीछे रोने वाला कोई परिवार था। वे विरक्त थे — जिनका घर भी राष्ट्र था और परिवार भी राष्ट्र।

भारतीय सेना की 24 वर्षों की सेवा में मैंने सीमा पर बन्दूक से शत्रु को रोकना सीखा था। किन्तु ग्वालियर की उस उपेक्षा ने सिखाया कि वैचारिक एवं ऐतिहासिक शत्रु को रोकने के लिए कलम उठाना अनिवार्य है।

निम्बार्क एवं रामानंद — दोनों परम्पराओं के संतों ने एक साथ माला और भाला उठाया। इसी साझे बलिदान को समझे बिना जगद्गुरु निम्बार्काचार्य की महत्ता को नहीं समझा जा सकता।

— नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

पूर्व नायब सूबेदार, भारतीय सेना

लेखक के दो शब्द

॥श्री राधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥श्री भगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

मैं विद्वान नहीं हूँ।

मैं एक फ़ौजी हूँ।

चौबीस वर्ष बंदूक लेकर देश की सेवा की।

२००८ से कलम लेकर सेवा कर रहा हूँ।

मेरा शोध किसी विश्वविद्यालय की पुस्तकों से नहीं है।

यह मन्दिर के आँगनों की धूल से है,

गाँव की कच्ची सड़कों की मिट्टी से है,

और उन वैष्णव सन्तों के उष्ण आँसुओं से है —

जो रो पड़े जब किसी ने पहली बार

उनकी परंपरा के बारे में पूछा।

मैं अपने पोते भावेश के साथ उन मन्दिरों तक गया

जो किसी पर्यटन मानचित्र पर नहीं हैं।

इस पुस्तक में भूलें होंगी — यह मैं जानता हूँ।

किन्तु यहाँ लिखा प्रत्येक तथ्य वह है

जो मैंने स्वयं देखा, सुना या स्पर्श किया है।

मुझे केवल एक प्रतिफल चाहिए —

कि निम्बार्क संप्रदाय को भारत के

आध्यात्मिक इतिहास में वह स्थान मिले

जिसका वह अधिकारी है।

विषय सूची

अध्याय 1

निम्बार्क तीर्थों की यात्रा का शुभारम्भ

कुछ यात्राएँ शरीर से होती हैं।
कुछ यात्राएँ आत्मा से होती हैं।
हरियाणा के रामनगर से महाराष्ट्र के मूँगी ग्राम —
गोदावरी के पावन तट तक की यह यात्रा दोनों थी।

७ जनवरी २०२६ को मैंने रामनगर — भगवान श्रीराम के नाम की उस पवित्र भूमि — से प्रस्थान किया। बस द्वारा दिल्ली पहुँचा और दिल्ली से रेल द्वारा छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद), महाराष्ट्र के लिए निकला।

रेल ८ जनवरी को प्रातः ७ बजे पहुँचनी थी। परंतु वह लगभग ८ घंटे विलम्ब से रात्रि १:१५ बजे पहुँची। किन्तु कोई भी विलम्ब इस यात्रा के उद्देश्य को कम नहीं कर सकता था।

स्टेशन पर मेरी प्रतीक्षा में — मुम्बई से केवल इस अवसर के लिए चले आए थे — माननीय पूर्व न्यायाधीश श्री राजेन्द्र वैष्णव जी। उन्होंने टैक्सी लेकर स्वागत किया — एक भाई की उष्णता से।

वहाँ उपस्थित लोगों ने जो देखा — वह केवल एक मेल-मिलाप नहीं था। वह श्रीकृष्ण और सुदामा के पावन मिलन का जीवंत दृश्य था। यहाँ पद नहीं था, प्रतिष्ठा नहीं थी — केवल सनातन संस्कार था।

अध्याय 3

नामकरण — निम्बार्क

एक दिन ब्रह्माजी संन्यासी का वेश धारण करके उनके पवित्र आश्रम पर आये और कहने लगे : हे ब्राह्मण ! मैं भूख से पीड़ित हूँ। सूर्यनारायण अस्त होने से पहले मुझे भोजन कराइये।'

यह सुनकर उन्होंने भोजन बनाना आरम्भ किया। किन्तु सन्ध्या समय समीप होने के कारण श्रीसूर्यदेव अस्ताचल को प्राप्त होने लगे।

तब उन मुनि ने अपने आश्रम के निम्बवृक्ष (नीम के पेड़) पर अपने दिव्य स्वरूप — श्रीसुदर्शन तेज — को स्थापित किया।

ब्रह्माजी यह देखकर विस्मय को प्राप्त हो गये। उन्होंने साष्टाङ्ग दण्डवत् कर प्रिय वचनों से स्तुति की और कहा :

'निम्बवृक्ष पर आपने सूर्य का प्रकाश दिखाया है। इस कारण संसार में आज से आपका निम्बादित्य (निम्बार्क) — यह नाम प्रसिद्ध होगा।'

इसके पूर्व आपका नाम श्रीनियमानन्द था। इस क्षण से — निम्बादित्य। निम्बार्क।

॥ निम्बादित्याय नमः ॥

॥ जय श्री राधे ॥

जगदगुरु निंबार्काचार्य :

सनातन के सूर्य

पुस्तक Amazon पर उपलब्ध है :

https://amzn.in/d/0cOvmcp5

लेखक :

नरेश दास वैष्णव निम्बार्क

अंतरराष्ट्रीय लेखक | इतिहासकार | सेवानिवृत्त भारतीय सैनिक

www.nareshswaminimbark.in

॥ श्री भगवान् निम्बार्काचार्य नमः ॥